भूमिका

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी और उड़िया कहानी की भावभूमि (1947-1967) शीर्षक प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का मुख्य उद्देश्य अभीष्ट कालखण्ड की हिन्दी और उड़िया कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन करना तथा उसी के माध्यम से दोनों भाषाओं के कहानी-साहित्य की भावभूमिगत समानता और विषमता को रेखांकित करना है । किन्हीं दो भिन्न साहित्यों की कहानियों का सही तुलनात्मक अध्ययन तब संभव होता है जब भावभूमि को ही अध्ययन का विषय बनाया जाता है । क्योंकि भावभूमि ही कहानी का वह तत्व है जिसपर कहानी के अन्यान्य तत्व आश्रित रहते हैं । सही समझ का केन्द्रबिन्दु भावभूमि ही है । राष्ट्रीय स्वतंत्रता के उपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जो कहानियां प्रकाश में आयीं वे नई भावभूमि और नयी मानवीय संवेदना की कहानियां हैं । कथ्य, और कथा-दृष्टि के धरातल पर इन कहानियों का तेवर स्वंतत्रता-पूर्व की कहानियों से सर्वथा भिन्न है ।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी से तात्पर्य है स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् लिखी गई कहानियां जिनमें भारतीय गणतंत्र की मानसिकता में आये मूल्यगत बदलाव और तात्कालिक सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक और नैतिक स्थितियों में आये परिवर्तन के तहत जीवन की संगतियों-विसंगतियों, पीड़न-उत्पीड़न, राग-विराग, स्नेह-संघर्ष, प्रेम-आक्रोश, पारिवारिक विघटन और मूल्यसंक्रमण की स्थितियों का पर्याप्त चित्रण हुआ है ।

सांविधिक मर्यादाओं से बँधे हुए भारतवर्ष की आत्मा एक है । किसी भी दृष्टि से इस विशाल देश की चेतना के स्तर पर अलगाव-विलगाव का प्रश्न नहीं उठता । जब राष्ट्रीय मनीषा के अवचेतन में राष्ट्रीय एकता की प्रबल भावना है उस भावना को सही तौर पर पहचानने का भी अखिल जनचेतना में आग्रह है । प्रश्न उठता है उस चेतना तक पहुँचने के लिए सही मार्ग क्या है ? साहित्य सर्वश्रेष्ठ संवेदनीय पक्ष है -कलाओं में श्रेष्ठ कला है और सूक्ष्मतम भी । जन-जन की भावभूमि साहित्य में प्रतिबिंबित होती है और साहित्य की सबसे अधिक सजग विधा कहानी है । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध भारतीय जन-जीवन की भावभूमि तक पहुँचने का एक प्रयास है ।

दो दशकों की हजारों कहानियों से गुजरते हुए हिन्दी और उड़िया की 51-51 बहुचर्चित कहानियों का चयन करना अपने आप में एक दुस्साध्य कार्य था । सन् 1950 से सन् 1970 की कालावधि हिन्दी कहानी का "स्वर्णिम काल कहा जा सकता है । रचनात्मक, प्रयोगात्मक, वैचारिक एवं स्वरूपगत परिवर्तन की दृष्टि से इस कालखण्ड में कहानी लेखन ने जितनी मानसिक, मानवीय और सौंदर्यशास्त्रीय आधार भूमियां बदलीं उतनी शायद इससेपूर्व कभी नहीं बदली थीं । परिवर्तित मानवीय संवेदनाओं एवं परिवेशगत स्थितियों में लिखी हिन्दी और उड़िया कहानियों के विवेचन-विश्लेषण के माध्यम से उनकी भावभूमि तक पहुँचने का प्रयास ही इस शोध प्रबन्ध का अभिप्राय है । भाव मानवीय चिन्तन का एक

चिरन्तन प्रवाह है । इसे किसी समय-सीमा में बांध कर यह नहीं कहा जा सकता कि अमुक भाव की भूमि यहां तक है और अमुक भाव की भूमि वहां तक है । एकाएक न कोई भाव उद्भूत होता है और न समाप्त । इसका प्रभाव पूर्ववर्ती कालखण्ड से प्रारंभ होकर परवर्ती कालखण्ड तक प्रवहमान रहता है अतः कहानियों के चयन और विवेचन के दौरान इसे दृष्टि में रखा गया है ।

हमारे अध्ययन का विषय कहानी की भावभूमि है अतः स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी और उड़िया कहानियों में ही उसकी अवस्थिति, साधर्म्य, वैषम्य और व्यतिक्रम पर विश्लेषण-विवेचन करने का प्रयास किया गया है किन्तु मूल संवेदना के परिप्रेक्ष्य में इस समय-सीमा के परिपार्श्व पर भी दृष्टिपात किया गया है।

शताब्दियों की परतंत्रता के पश्चात् स्वतंत्रता की खुली हवा में सांस लेने के लिए हमारा गणतंत्र जिन संक्रान्त-आक्रांत परिस्थितियों से होता हुआ आया था, सांप्रदायिक वैमनस्य, रक्तपात और बहशीपन के कारण आहत मूल्यों को झेल रहा था और राजनीति मूल्यहीनता तथा मानवीय दारिद्र्य को झेलने जा रहा था, तात्कालिक कहानियों में इन समस्त भावभूमियों से साक्षात्कार होता है ।इस कालखण्ड की कहानियों में परम्पराएं खंडित हुईं, रिश्ते टूटे, आदर्श भूलुंठित हुआ, नैतिकता बौनी हुई और समस्त पुरातन मानवीय मूल्य विघटित हो गये । प्रस्तुत अध्ययन में इन सारी स्थितियों को विश्लेषित कर कहानी की भावभूमि तक पहुँचने और उसके मूल कथ्य को उद्भासित करने का प्रयत्न किया गया है ।

प्रथम अध्याय में कहानी के सैद्धांतिक पक्ष का विवेचन करते हुए भाषा, कथा, कथ्य, भाव और भूमि के पांच पड़ावों को पारकर कहानी की भावभूमि तक पहुँचने का प्रयास किया गया है ।

द्वितीय अध्याय इस कालावधि में हुए सामाजिक परिवर्तन, राजनीतिक विघटन, तथा तद्जनित विभिन्न सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में लिखी गई कहानियों के विवेचन के माध्यम से सामाजिक भावभूमि को विश्लेषित करता है ।

तृतीय अध्याय में उक्त कालखण्ड की उन कहानियों का अध्ययन किया गया है जो मार्क्सवादी विचारधारा के तहत लिखी गईं और जिनमें आर्थिक वैषम्य, भ्रष्ट नौकरशाही, प्रशासनतंत्र की अराजकता, गरीबी, शोषण, वर्गसंघर्ष तथा युवापीढ़ी के आक्रोश का चित्रण हुआ है । मार्क्सवादी चिन्तन-चेतना की इन कहानियों से गुजरते हुए हिन्दी और उड़िया कहानियों की आर्थिक भावभूमि को तलाशना ही इस अध्याय का अभिप्राय है ।

चतुर्थ अध्याय कहानी की नैतिक भावभूमि के अध्ययन पर केन्द्रित है । आलोच्य-काल में सबसे अधिक यदि किसी वस्तु का ह्रास हुआ है तो वह है नैतिकता। वैज्ञानिक उपलब्धि बढ़ी, बौद्धिकता का विकास हुआ, औद्योगिक आन्दोलन हुए और प्रौद्योगिकी की उन्नति हुई किन्तु मानव का अन्तर्बाह्य दोनों बौना होता चला गया । उसके चेतन और अवचेतन में कुंठाएं घर करती गईं, अहंचेतना की वृद्धि हुई, "स्व" के प्रति सजगता बढ़ी और व्यक्ति व्यक्ति-केन्द्रित होता गया ।

इन समस्त मनःस्थितियों की कहानियों को विश्लेषित करते हुए नैतिक भावभूमि को उजागर कर नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में कहानी के मूल कथ्य को उद्घाटित करने की चेष्टा की गई है ।

अन्त में पृथक रूप से उपसंहार का भी समावेश किया गया है जो हमारे अध्याय की उपलब्धि का द्योतक है । अध्ययन की परिधि में आयी सभी हिन्दी और उड़िया कहानियों का कथासार का सम्पादन भी हमने किया है और सहज संदर्भ के लिए उन्हें उपसंहार के अन्त में यथाक्रम परिशिष्ट -1 और परिशिष्ट -2 के रूप में संलग्न किया है ।

भावभूमि के विभिन्न धरातलों के माध्यम से नयी कहानी के वैशिष्ट एवं मूल्य परिवर्तन के तहत हमने कथ्य को रेखांकित किया है । दो सन्निकट भाषा के कथा-धरातल को समझना इस अध्ययन की विशिष्टता है । वैसे कोई भी शोधकार्य अपने आप में महत्वपूर्ण होता है । साहित्यिक शोधकार्य में शोधार्थी का दायित्व निश्चित रूप से बढ़ जाता है । दो भिन्न भाषा के साहित्य की विधा- विशेष पर तुलनात्मक अध्ययन करना और अधिक दायित्व का कार्य है । इस प्रकार के अध्ययन के दौरान शोधार्थी के समक्ष अपेक्षाकृत अधिक कठिनाइयां उपस्थित होती हैं । एक तो प्रतिनिधि कहानीकार चुनना जितना कठिन है उतना ही कठिन कार्य है रचना का चयन । साहित्य-कृतियों के प्रकाशन, अनुसूचीकरण, संरक्षण आदि के क्षेत्र में आज भी हमारे देश में अराजकता है । हमारे ग्रंथागारों में सर्वत्र पुस्तकों का वर्गीकरण, संरक्षण की वैज्ञानिक पद्धति अपनायी नहीं जाती है । फलतः शोधार्थी को जाने कितनों के दरवाजे खटखटाने पड़ते हैं । सबसे बड़ी कठिनाई होती है प्रकाशन संबंधी विवरण इकट्ठा करने में । कृति की मूल रचना-तिथि प्राप्त करना भी दुरूह कार्य है । अध्ययन के दौरान हमने कुछ रचनाकारों से सम्पर्क भी किया । आश्चर्य की बात है कि स्वयं रचेता भी मूल रचना-तिथि उपलब्ध कराने में असमर्थ हैं । इसलिए प्रकाशन तिथि को ही हमने स्वीकार कर लिया है ।

हमने निष्ठा के साथ मूल रचना का अध्ययन किया है । कुछ कहानियां विभिन्न संस्करणों और संकलनों में आयी हैं । अध्ययन के दौरान हमारी सजगता बराबर बनी रही है कि कहीं प्रक्षिप्तता तो नहीं आ गई । सही कृति के पठनोपरान्त उसपर प्रकाशित विभिन्न विद्वानों के मंतव्य, समीक्षा, टीका-टिप्पणी आदि पर भी हमने सोचा-विचारा है ।

जहां तक हमारे अध्ययन की मौलिकता का प्रश्न है हम विनम्रतापूर्वक यही कहना चाहेंगे कि विवेच्य कालावधि की हिन्दी और उड़िया कहानियों के भावभूमिगत अध्ययन का यह पहला प्रयास है । शतप्रतिशत मौलिकता का दावा कहानीकार अपनी रचना पर कर सकता है, जहां तक आलोचना-विवेचना का प्रश्न है हमने मौलिक ढंग से सोचने का प्रयास किया है । हमारी विवेचन दृष्टि की मौलिकता प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की मौलिकता है ।

शोध कार्य के लिए जिस दृष्टि, प्रेरणा, परामर्श एवं विद्वतापूर्ण निर्देशन की आवश्यकता होती है वह मुझे श्रद्धेय गुरूवर डॉ० अर्जुन शतपथी, अध्यक्ष, हिन्दी

विभाग, सरकारी महाविद्यालय, राउरकेला के उदारमना व्यक्तित्व से ही प्राप्त हुआ है । अध्ययन काल में उन्होंने मेरे प्रति जिस असीम स्नेह और आत्मीयता का परिचय दिया है, वह मैं आजीवन भूल नहीं पाऊँगा । अध्ययनकाल में उन्होंने अस्वस्थता के बावजूद अपने कॉलेज पुस्तकालय से अनुपलब्ध पुस्तकें उपलब्ध कराकर जो सुविधाएं प्रदान कीं तथा कहानियों के चयन-विशेषकर उड़िया कहानियों के चयन में जो सहयोग दिया वह संभवतः उन्हीं के व्यक्तित्व की विशिष्टता है । उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के बजाय संभवतः यह कहना ज्यादा उचित होगा कि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की सम्पूर्णता का सारा श्रेय उन्हीं को है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के लेखन के लिए मैंने विभिन्न स्थानीय महाविद्यालयों के पुस्तकालयों, ग्रंथालयों के अतिरिक्त, उत्कल प्रगति संघ, गोपबन्धु पुस्तकालय, राष्ट्रभाषा पुस्तकालय तथा राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता के हिन्दी अनुभाग की सहायता ली । इन पुस्तकालयों के पुस्तकाध्यक्षों का सहयोग न मिला होता तो संभवतः वांछित शोध सामग्री तथा संदर्भ साहित्य उपलब्ध नहीं हो पाता । मैं उन तमाम सहयोगियों के प्रति आभारी हूँ जिनके सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हो सका ।

इस शोध कार्य को पूरा करने में मेरे जिन स्वजनों, मित्रों एवं हितैषियों ने सहायता दी है उनके प्रति आभार प्रकट किये बिना मैं दायित्व-मुक्त नहीं हो सकता । नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता से कुछ अनुपलब्ध कहानियों की फोटो कापी बनवाकर भेजने के लिए अपने दामाद श्री अशोक कुमार भगत तथा अपनी पुत्री श्रीमती सुमन भगत के प्रति आभार प्रदर्शन के बिना यह भूमिका-लेखन पूरा नहीं होता है ।

मेरे शोध का वास्तविक आधार हिन्दी और उड़िया कहानियां हैं । मूल कहानीकारों तथा संबंधित संदर्भग्रंथों के लेखकों के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ ।

अन्त में मैं इस शोध प्रबन्ध के शुद्ध, स्वच्छ और सुन्दर टंकण के लिए सुश्री सुरभि साहा और टंकित सामग्री को सुधारने के लिए सुश्री स्वर्णा साहा को धन्यवाद दिये बिना भी नहीं रह सकता ।

- मधुसूदन साहा 20/3/90

राउरकेला
दि0